❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्। सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।

O God ! Verily there is none like you.
You are matchless.

वर्ष 39, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 जुलाई, 2016 से रविवार 17 जुलाई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

म्यांमार (बर्मा) में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2017

लगभग 50 वर्ष पश्चात् सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का बर्मा दौरा

बर्मा में हिन्दी भाषा के लिए चल रहा है 'सर्वशिक्षा अभियान'

प्रचारकों द्वारा इन क्षेत्रों में कार्य बढ़ाया जाना सम्भव

विश्व भर में फैले हुए आर्य समाज के संगठन के इतिहास के बारे में यदि हम दृष्टि डालें, केवल तभी हमें यह जानकारी मिल सकती है कि आर्य समाज के आरम्भिक काल में वैदिक धर्म की पताका को स्थान-स्थान पर फैलाने के लिए आर्य जनों ने कितना कठोर परिश्रम किया, अंग्रेजों के शासनकाल में आर्य समाज के विपरीत कार्य करने की स्थिति में, साधनों के अभाव में, राजनीतिक छत्र-छाया के अभाव में, हमारे प्रचारकों, हमारे नेताओं, ने कितना परिश्रम किया होगा। आर्य समाज की स्थापना के लगभग 25 वर्ष में ही दुनिया के पांचों महाद्वीपों में आर्य समाज किसी न किसी रूप में पहुंच चुका था। इतिहास लम्बा है वर्तमान लेख उसकी अनुमति नहीं देता किन्तु मैं यह कह सकता हूं कि जो अधिकारी वर्तमान में आर्य समाज के कार्य करना चाहें, उन्हें एक बार आर्य समाज के पूर्ण इतिहास को अवश्य ही पढ़ना चाहिए। उसको पढ़े बिना अपने कार्य से पूर्ण न्याय नहीं कर पाएंगे। यूं तो आर्य समाज के इतिहास की दृष्टि से अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं जिन्हें आर्य समाज का साहित्य भी कहा जा सकता है इतिहास भी। पहली पुस्तक स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखी जो 2 भागों में है एवं इसके पश्चात् बहुत विस्तार से डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार जी ने सात भागों में लिखा। दोनों ही इतिहास अपने आप में अतुल्य हैं। इन सभी पुस्तकों में इतनी सामग्री है जो किसी भी संस्था के मानने वाले के लिए गौरव का विषय हो सकती है। फिर भी आर्य समाज का कार्य विस्तार इतना अधिक हुआ कि उसका समस्त इतिहास सुरक्षित न हो सका, यह बात हमने गत बर्मा यात्रा के दौरान वहां के आर्य समाज के कार्यों का व वहां के इतिहास को देखकर महसूस की।

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

म्यांमार (बर्मा) के आर्यसमाज भवनों – आर्यसमाज तठैगां, आर्यसमाज मांडले में आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के अधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य।

सभा द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् के नए भवन का शिलान्यास सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज एल ब्लाक हरि नगर में संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् के परिसर में 4 जुलाई 2016 को महाशय धर्मपाल आर्य छात्रावास की आधारशिला महाशय धर्मपाल आर्य चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप के करकमलों द्वारा रखी गयी।

ज्ञातव्य है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह प्रकल्प एक वृहद उद्देश्य को लेकर संचालित किया जा रहा है। लगभग 3 वर्षों से संचालित इस गुरुकुल में अभी 10 ब्रह्मचारी संस्कृत के माध्यम से अध्ययनरत हैं। स्थानाभाव में इस गुरुकुल का विस्तार नहीं हो पा रहा था। साथ ही उपलब्ध भवन में गुरुकुल चलने के कारण से आर्यसमाज की गतिविधियों को संचालित करने में भी कुछ कठिनाई थी। महाशय धर्मपाल जी ने इस कठिनाई को महसूस करते हुए एवं भविष्य में इसकी उपयोगिता को दखते हुए इसके भवन के निर्माण की आवश्यकता को पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया तथा इसकी नींव रखकर कार्य का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर सर्वश्री धर्मपाल आर्य जी, शिव कुमार मदान जी, ओम प्रकाश आर्य जी, राजेन्द्र जी, अनिल अरोड़ा जी, महेन्द्र सिंह आर्य जी, वीरेन्द्र मल्होत्रा जी, एस. पी. सिंह जी, अजय तनेजा, सुखबीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, नीरज आर्य आदि अनेक आर्यजन एवं स्थानीय गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

सम्पादकीय

लिव इन का सच एक खतरनाक संकेत

नोएडा सेक्टर-27 में रविवार को डॉक्टर कपिल भाटी ने पिस्टल से खुद की कनपटी पर गोली मार ली। डॉक्टर कपिल ने अपने सात पेज के सुइसाइड नोट में लिखा है कि उन्होंने सुइसाइड का कदम बहुत हताश होने के बाद उठाया। हम दोनों लिव इन रिलेशनशिप में रहते थे। किन्तु युवती ने कभी पिता की आर्थिक हालत खराब बताई तो कभी पढ़ाई के बहाने से तो कभी किसी अन्य बहाने से रुपये लेती रही। दो साल में युवती ने करीब 24 लाख रुपये मुझसे ऐंठ लिए। जब कपिल ने युवती और उसके भाई के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो दोनों ने इंकार कर दिया। कपिल ने जब रुपये वापस मांगे तो प्रेमिका आगबबूला हो गई और रेप में फंसाकर जीवन बर्बाद करने की धमकी देने लगी। इस प्रकार की खबर पढ़कर लगता है जितना बदलाव हमारे समाज में पिछले 100 वर्षों में आया उतना ही बदलाव अभी पिछले लगभग 15 सालों में आ गया। लगता है हमने अगले सौ वर्षों का सफर पिछले 15 सालों में तय कर लिया। चिंता यह नहीं है कि सुइसाइड क्यों कर लिया बल्कि चिंता का विषय यह कि अगले 15 वर्षों में हमारी संस्कृति और समाज कहाँ होगा? जवाब टालकर या भविष्य के सहारे छोड़कर भी काम नहीं चलेगा क्योंकि आज की नींव ही कल के निर्माण का भविष्य तय करेगी। अब थोड़ी समझदारी जिम्मेदारी से काम करना होगा आज खुद भी समझना होगा और भेड़-चाल चल रही कुछ नई पीढ़ी को बताना होगा कि यदि आप नई परम्परा को जन्म दे रहे हैं तो इसकी गरिमा को भी बनाये रखना होगा! पिछले दिनों प्रत्यूषा बनर्जी का मामला भी सामने आया और हाल में ही हुए 2 मई को पत्रकार पूजा तिवारी आत्महत्या प्रकरण भी इसी बिना बंधन के रिश्ते लिव इन रिलेशनशिप का एक भयावह परिणाम है। कहने का तात्पर्य यही है कि हाल के दिनों में लिव इन के साथ यौन शोषण, धोखाधड़ी और घरेलू हिंसा के मामलों में काफी इजाफ़ा हुआ है। ऐसे में आजादी की चाह रखने वाले युवाओं को लिव इन रिश्ता थोड़े समय के लिए भले ही मौज मस्ती और खुलेपन का एहसास देता हो लेकिन पूजा हो या प्रत्यूषा या अब डॉक्टर कपिल भाटी इनकी डेथ मिस्ट्री से जुड़ा लिव-इन का सच खतरनाक संकेत दे रहा है जिससे युवाओं को सबक लेने की जरुरत है। आज युवाओं को सोचना होगा कि हर एक रिश्ते की गरिमा के साथ उसका भविष्य भी होता है और जिस रिश्ते का भविष्य न हो तो वह रिश्ता ही क्या होता है?

बीते सालों पर नजर डालें तो साफ हो जाता है कि लिव इन रिलेशनशिप में न केवल हिंसा के मामलों में बढ़ोतरी हो रही है बल्कि लिव इन में रहने वालों के खिलाफ दुष्कर्म के मामलों में भी कई गुना बढ़ोतरी हुई है। यह चिंता का विषय है। आज के दौर में लिव इन रिलेशनशिप के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। साथ ही इनमें हिंसा के मामलों में भी तेजी आई है। अकेले राजधानी दिल्ली में पिछले चार सालों में लिव इन में हिंसा के मामलों में कई गुना ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। इस खेल में मीडिया भी लड़कियों की आजादी का एक झूठा स्वांग रचता दिखाई देता है। कई बार अनजाने में हम पाते हैं कि आज कुछ पत्रकारिता अपने पूरे चरित्र में भयानक संस्कृति विरोधी हो उठी है। एक दूसरे से आगे निकलने के लिए खबरों को चटपटा बनाने का खेल धीरे-धीरे इनकी संपादकीय नीति का हिस्सा सा बनता जा रहा है। जिसके पीछे यह नजरिया काम कर रहा है कि अगर आप किसी विषय को गंभीरता से लेंगे तो पाठक भाग जाएगा। यानी वहां गंभीर विषयों का भी तमाशा ही बनाया जा रहा है।

भले ही आज के युवा वर्ग का कुछ हिस्सा इस तरह के संबंधों को कानून के बाद सामाजिक स्वीकारोक्ति मिलने की मांग करते हुए नैतिकता पूर्ण रिश्तों पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए नैतिकता को वह व्यक्तिगत मामला बताकर कह रहा हो कि जरूरी नहीं सभी के लिए नैतिकता के मायने समान हों। हर किसी का भिन्न द्रष्टिकोण होता है। लिव इन रिलेशनशिप की वकालत करने वाले कहते हैं कि इसमें जिम्मेदारियों के अभाव में लाइफ टेंशन फ्री होती है, जिन्दगी भर किसी एक के साथ बंधे रहने की मजबूरी नहीं होती। जब आपको लगे कि आप एक दूसरे के साथ खुश नहीं हैं। आप एक दूसरे को छोड़ सकते हैं यानी आप बिना किसी झंझट के साथी बदल सकते हैं। मतलब साफ है कि आज यह लिव इन रिश्ता उन लोगों को खासा आकर्षित करता है जो वैवाहिक जीवन तो पसंद करते हैं लेकिन उससे जुड़ी जिम्मेदारियों से मुक्त रहना चाहते हैं। यह तो हुआ इस रिश्ते का खुशनुमा पहलू लेकिन बिना बंधन के इस रिश्ते का एक दर्दनाक पहलू भी है जिससे अधिकांश युवा अनजान हैं। जो पूजा तिवारी, प्रत्यूषा बनर्जी और डॉक्टर कपिल भाटी की मौत के मामले में साफतौर पर सामने आया है।

माना कि इस रिश्ते में कोई दायित्व नहीं होता। आप बिना किसी बंधन के एक दूसरे के साथ रहते हैं लेकिन जब दो लोग एक दूसरे के साथ रहने लगते हैं तो वे एक दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से भी जुड़ते हैं और इस जुड़ाव में वे एक दूसरे से अपेक्षाएं भी रखने लगते हैं लेकिन जब दोनों साथी में से कोई भी एक सामने वाले की भावों की अनदेखी करता है तो भावनात्मक रूप से कमजोर साथी इसे धोखा समझता है और कुछ न कर पाने की स्थिति में तनाव का शिकार हो जाता है और बिना बंधन का यह रिश्ता दर्दनाक बन जाता है। शायद इसी वजह से दिल्ली हाईकोर्ट ने खासकर लड़कियों को सुझाव दिया है कि वह किसी भी रिश्ते-चाहे शादी का हो या फिर लिव इन-में-जाने से पहले सोच-समझकर कदम उठायें। असल में विवाह न केवल भारत में बल्कि बाकी संस्कृतियों में भी पवित्र माना गया है और इसे धार्मिक भावना से भी जोड़कर देखते हैं जिसमें दोनों अपने जीवनसाथी के साथ जीवनभर के लिए वफादार रहने का प्रण लेते हैं और इसे इतना पवित्र और खास समझे जाने के पीछे महिला की सुरक्षा भी निहित है जिसमें एक स्त्री के अस्तित्व के लिए शादी के बाद कानूनी तौर पर उसे अपने पति की जायदाद में आधा हिस्सेदार माना गया है। अब सवाल यह है कि अगर हम आधुनिकता के नाम पर इन रिश्तों को अमली जामा पहनाते भी हैं तो युगों से सहेजी गई भारतीय संस्कृति और संस्कारों का क्या होगा? **- सम्पादक**

वेद-स्वाध्याय

अभय ज्योति

न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा।
पाक्याचित् वसवो धीर्याचिद् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम्।। -ऋ. 2/27/11
ऋषि : कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा।। देवता - आदित्याः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- न दक्षिणा विचिकिते= न दायीं ओर कुछ दिखाई देता है **न सव्या**=और न बायीं ओर **न**= न **आदित्याः**= हे आदित्यदेवो! **प्राचीनम्**= सामने ही कुछ दिखाई देता है **न उत पश्चा**= और कुछ पीछे, इसलिए **पाक्याचित्**=मैं चाहे कितना अपरिपक्व, कच्चा होऊँ और **धीर्याचित्**=चाहे कितना धैर्यरहित, दीन होऊँ **वसवः**= हे वासक आदित्यो! **युष्मानीतः**= किसी तरह तुम्हारे द्वारा ले-जाया गया मैं **अभयं ज्योतिः**= भय-रहित प्रकाश को अश्याम्=प्राप्त हो जाऊँ।

विनय- आजकल मैं एक अँधेरी रात्रि में घिरा हुआ हूँ। मेरे मानसिक नेत्रों के सामने एक ऐसा दुर्भेद्य काला पर्दा आ गया है, जिसने कि मेरा सम्पूर्ण प्रकाश रोक लिया है। अपनी वर्त्तमान आध्यात्मिक समस्या को हल करने में ही मैं दिन-रात डूबा हुआ हूं; कहीं से भी कोई प्रकाश की किरण मिलती नहीं दीखती। चारों ओर अन्धेरा-ही-अन्धेरा है-घोर घुप्प अन्धेरा है। दाएँ-बाएँ कहीं कुछ दृष्टि नहीं आता, आगे या पीछे कहीं भी इस अन्धकारमय उलझन से बाहर निकलने का रास्ता नहीं सूझता। क्या करूँ? यह भयंकर रात्रि क्या कभी समाप्त भी होगी या नहीं? इस अन्धे जीवन से तो मरना भला है। खाता-पीता, चलता-फिरता हुआ भी मैं आज मुर्दा हूँ। चौबीसों घण्टे विचारने में ग्रस्त हूँ, पागल हो रहा हूँ, प्रकाश पाने के लिए निरन्तर घोर युद्ध में लगा हुआ हूं, पर इस काली रात्रि का कहीं अन्त होता नहीं दिखाई देता! हे देवो! भगवान् के दिव्य प्रकाश का सन्देश लाने वाले हे उसके 'आदित्य' नामक दूतो! मैं तुम्हें याद कर रहा हूं, तुम्हारी राह देख रहा हूं। तुम मुझे इस रात्रि से शीघ्र पार ले-चलो, नहीं तो अब मेरा जीना कठिन हो रहा है। सुना है कि बुद्ध, ईसा, दयानन्द आदि अनेक महात्मा अपना दिव्य प्रकाश पाने से पहले ऐसी अन्धेरी रात्रियों में से गुज़रे थे, परन्तु वे तो जन्म-जन्मान्तरों के पके हुए थे और बड़े धीर थे। मैं बिलकुल कच्चा, अपरिपक्व ज्ञानवाला और बड़ा दुर्बल, अधीर हूँ। मुझे इससे पार कौन ले-जाएगा? किसी तरह भी हो, हे वासक आदित्यो! तुम मुझे भी बसा लो, अन्धकार से निकाल मुझे मरने से बचा लो। मैं चाहे जितना अज्ञानी, कच्चा और धैर्यरहित होऊँ, पर यदि तुम मुझे ले-चलोगे-मेरे नायक बन जाओगे-तो मैं नि:सन्देह अन्धकार को समाप्त कर प्रकाश को पा जाऊँगा और तब इस महाभय से पार हो जाऊँगा। मेरी यह भय की अवस्था उस ज्योति को पाकर ही मिटेगी। मुझे चाहिए वह अभय ज्योति! हाँ, वह अभय ज्योति!!

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

बोध कथा

मुझे मुक्ति नहीं चाहिए

फ़र्रुख़ाबाद में गंगा के किनारे महर्षि एक झोंपड़ी में रहते थे। एक दिन उनके मित्र स्वामी कैलास आश्रम वहाँ आ गए। स्वामी कैलास आश्रम ने महर्षि के दरवाजे पर आकर कहा- ''दयानन्द! मैं तुमसे एक बात कहने आया हूं अन्दर आ जाऊँ?''

महर्षि हँसते हुए बोले- 'अवश्य आओ महात्माजी! इस छोटे से झोंपड़े में, यदि कैलास पूरा आ सकता है, तो आओ अवश्य।''

कैलासजी अन्दर आकर बोले- ''दयानन्द! मै। तुमसे पूछने आया हूं कि इतना तप करने के पश्चात्, इतना योगसाधन करने के बाद और मोक्ष का अधिकारी बनने के अनन्तर तुम यह किस धंधे में फँस गए हो? क्या सारे संसार की चिन्ता तुम्हें अशान्त किये देती है?''

महर्षि ने इस बात को शान्ति से सुना, फिर गम्भीर आवाज में बोले-''सुनो कैलास! जो कुछ तुमने कहा, उसे मैं समझता हूं, परन्तु मैं केवल अपने लिए मोक्ष नहीं चाहता। मैं इस जलते हुए संसार के लिए शान्ति चाहता हूं। इस संसार में जाकर देखो! यह आंसुओं के सागर में डूबा जाता है, सुलगता है, तड़पता है। मैं इसे छोड़कर जाऊँगा नहीं। मुक्त होऊँगा तो सबको साथ लेकर, नहीं तो यह मुक्ति मुझे चाहिये नहीं।''

खुदा के बन्दे तो हैं हज़ारों, वनों में फिरते हैं मारे-मारे।
मैं उसका बन्दा बनूंगा जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा।।

जो सच्चे हृदय से जनार्दन को प्यार करता है, वह उस जनता को प्यार क्यों न करे, जो जनार्दन की कृति है? महर्षि दयानन्द के विश्व प्रेम का आधार यही विश्व रूप प्रेम था।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

इस्लाम की शान्ति पर सवाल?

29 जून इस्तांबुल एयरपोर्ट पर हुए धमाके में 41 लोगों की मौत हो गई। मरने वाले 41 लोगों में 13 विदेशी नागरिक हैं। 30 जून को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के बाहर आत्मघाती हमलावरों ने 40 लोग मार डाले। दो जुलाई को ढाका में आतंकियों द्वारा 21 लोगों की गला रेतकर हत्या कर दी जाती है और 3 जुलाई को बगदाद में एक विस्फोट कर 119 लोगों की। 4 जुलाई सऊदी अरब जेद्दाह में अमरीकी वाणिज्य दूतावास के पास एक आत्मघाती हमलावर ने खुद को उड़ा दिया है। ज्ञात हो सभी घटना इस्लामिक मुल्कों में हुई किन्तु इन सबके बाद भी इस्लाम को शांति का मजहब बताकर पवित्र रमजान माह का हवाला देकर बचाव पक्ष सामने खड़ा दिखाई दे रहा है। जबकि बचाव पक्ष हर बार यह भूल जाता है कि ऐसे बयानों से आप अनजाने में मजहब की बजाय आतंक का बचाव कर जाते हैं। चलो एक बार फिर पूरे विश्व के समुदाय को निंदा करने का अवसर मिला, एक बार फिर आतंक की पहचान पर प्रश्न उठ रहा है कि आतंक को किसी ध र्म से जोड़ें या नहीं जोड़ें! ढाका के रेस्टोरेंट में आतंकवादी 'अल्लाह-ओ-अकबर' के नारे लगाते हुए घुसे और रेस्टोरेंट में अधिकतर विदेशी समुदाय के लोगों की हत्या को अंजाम दिया यानी आतंकियों ने अपना लक्ष्य बड़े ध्यान से चुना था। विदेशी नागरिकों की हत्या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अभूतपूर्व सुर्खियां दिलवाती हैं। पश्चिमी विदेशी मीडिया ने इस आतंकी हमले को व्यापक कवरेज दी और कईयों ने तो इन आतंकियों को मात्र ''बन्दूकधारी'' ही कहा। जबकि आतंकी कुरान की आयतें न पढ़ने वालों की चाकुओं से गर्दन रेत रहे थे। आतंकियों ने अपने धार्मिक जुड़ाव और जिहाद के प्रति प्रतिबद्धता को लेकर किसी के भी मन-मस्तिष्क में तनिक भी संदेह नहीं छोड़ा कि वे धर्म विशेष के लिए ही मारने मिटने आये थे।

हालाँकि बांग्लादेश से निर्वासित लेखिका तसलीमा नसरीन ने हमलावरों को बंदूकधारी कहे जाने के संबोधन के मुद्दे पर पूछा है कि उन्हें इस्लामिक आतंकी क्यों न नहीं कहा जा रहा है? "मीडिया उन्हें गनमैन लिख रहा है, लेकिन उन्होंने लोगों को मारने और उनमें दहशत फैलाने से पहले अल्ला हू अकबर का नारा लगाया।" क्या उन्हें इस्लामी आतंक नहीं कहा जाना चाहिए? तस्लीमा ने कहा कि इस्लाम को शांति का धर्म कहना बंद करें। अब यह मत कहिए की गरीबी और निरक्षरता लोगों को इस्लामिक आतंकवादी बनाती है, इस्लामिक आतंकवादी बनने के लिए गरीबी निरक्षरता, तनाव , अमेरिकी विदेश नीति और ईजराइल की साजिश की जरूरत नहीं है। आपको इस्लाम की जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने इस तर्क को भी खारिज किया कि गरीबी किसी को आतंकवादी बना देती है। ढाका हमले के सभी आतंकी अमीर परिवार से थे और सभी ने अच्छे स्कूलों में पढ़ाई की थी।

ऐसा नहीं है तसलीमा ने ऐसा पहली बार कहा, इससे पहले भी उसने विश्व समुदाय को कई बार चेताया है, 2015 में तसलीमा ने कहा था कि आज बांग्लादेश में है, कल पाकिस्तान में होगा, परसों भारत में होगा। उसने आगे कहा था कि सिर कलम करना कैसे सीखते हैं ये लोग? पहले बैलों का सिर काटते है उसके बाद मनुष्यों का। अकेले तसलीमा ही नहीं फिल्म अभिनेता इरफान खान ने भी इस्लामिक आतंक पर खुलकर सवाल खड़े करते हुए कहा कि कुरान की आयतें न जानने की वजह से रमजान के महीने में लोगों को कत्ल कर दिया गया। हादसा एक जगह होता है और बदनाम इस्लाम और पूरी दुनिया का मुसलमान होता है ऐसे में क्या मुसलमान चुप बैठा रहे और मजहब को बदनाम होने दे? या वह खुद इस्लाम के सही मायने को समझे और दूसरों को बताएं कि जुल्म और नरसंहार करना इस्लाम नहीं है।

हमेशा इस्लाम के जानकार और चिंतक कहते हैं कि आतंकवाद और इस्लाम का कोई संबंध हो ही नहीं सकता। जो मुसलमान इस्लाम का नाम लेकर कभी और कहीं आतंकवादी घटना में लिप्त होते हैं, दरअसल वे मुसलमान नहीं हैं। उनका इस्लाम से हरगिज कोई संबंध नहीं हो सकता। मुस्लिम नेता हमेशा लोगों के दिमागों में यही बात ठूंसने की कोशिश करते रहते हैं कि इस्लाम एक शांति का ध र्म है और उसका आतंकवाद से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन जब भी कोई मुस्लिम आतंकवादी पकड़ा जाता है, तो यह मौलवी और नेता चुप्पी साध लेते हैं या कहने लगते हैं कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता है किन्तु इस प्रश्न का जवाब किसी चिन्तक के पास नहीं होता है कि हर एक आतंकी हमला कुरान, जिहाद अल्लाह हु अकबर के नारे से ही जुड़ा क्यों होता है? पिछले दिनों अमेरिकी लेखिका पामेला जेलर ने पूछा था 9/11 को हमला करने वाले आतंकियों ने 90 बार अल्लाह हू अकबर कहा था। कोई मुझे बताये कि इसे इस्लामिक आतंकवाद क्यों न कहें? यह सच मुसलमानों को चुभता क्यों है? आस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी एबट ने कहा था जिसकी भरपूर आलोचना भी हुई थी कि इस्लाम धर्म में बहुत समस्याएं आ खड़ी हुई हैं और इसीलिए सुधारों की जरूरत है आस्ट्रेलियाई मीडिया में छपे एबट के खत के मुताबिक सभी संस्कृतियां बराबर नहीं हैं और पश्चिम को अपने मूल्यों का बचाव करते हुए माफी मांगना बंद कर आतंक से निपटना चाहिए। हर एक हमला कट्टरपंथी इस्लामी हिंसा के स्तर को और आगे ले जाने के मकसद से किया जाता है। कट्टरपंथी समुदाय इस बात को क्यों नहीं समझते कि हर एक संस्कृति मूल्यवान है। आखिर 1400 साल पहले आपके द्वारा बनाये गये नियम विश्व समुदाय क्यों माने? और यही सोच क्यों निर्धारित कर ली है कि हमारी संस्कृति उत्कृष्ट एवं अन्य संस्कृतियाँ निचली दोयम दर्जे की हैं?

हालाँकि आतंक के परिप्रेक्ष में भारतीय मुस्लिम की बात की जाये तो इसकी भूमिका अभी तक सराहनीय रही है। वह ना उम्मीदी का शिकार नहीं है। वह मजहब के उसूलों से बड़ा भारत का संविधान मानता है। किन्तु ढाका में हमले के गहरे संदेश भारत के लिए जरूर छिपे हैं। अपने पाले हुए आतंक से जो दु:ख आज भारत के पड़ोसी झेल रहे हैं, जल्द ही भारत भी इसकी चपेट में घिरता दिखाई दे रहा है इसके लिए आज बांग्लादेश जैसे कमजोर देशों की मदद करने के अलावा भारत समेत वैश्विक समुदाय को उन देशों को भी चिह्नित करना होगा जो अपने भू-राजनीतिक लक्ष्यों को पाने के लिये एक उपकरण के रूप में आतंकवाद का सहारा लेते हैं और यह सुनिश्चित करना होगा कि वे सभ्य समाज और विश्व के नियमों के या लोक नियमानुसार व्यवहार करें। बांग्लादेश के मजहबी जुनून में पागल जो लोग आज कुरान की आयत न पढ़ पाने पर हत्या कर रहे हैं उन लोगों को सोचना होगा 1971 में जब पाकिस्तान की आर्मी अल्लाह को महान बताकर ढाका की सड़कों पर निर्दोषों का खून बहा रही थी तब हमारी मुक्ति वाहिनी सेना ने बिना किसी भेदभाव के किसी मुस्लिम की जान उससे गीता के श्लोक पढ़वाकर नहीं बचाई थी!

-राजीव चौधरी

....ढाका के रेस्टोरेंट में आतंकवादी 'अल्लाह-ओ-अकबर' के नारे लगाते हुए घुसे और रेस्टोरेंट में अधिकतर विदेशी समुदाय के लोगों की हत्या को अंजाम दिया यानी आतंकियों ने अपना लक्ष्य बड़े ध्यान से चुना था। विदेशी नागरिकों की हत्या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अभूतपूर्व सुर्खियां दिलवाती हैं। पश्चिमी विदेशी मीडिया ने इस आतंकी हमले को व्यापक कवरेज दी और कईयों ने तो इन आतंकियों को मात्र ''बन्दूकधारी'' ही कहा जबकि आतंकी कुरान की आयतें न पढ़ने वालों की चाकुओं से गर्दन रेत रहे थे। आतंकियों ने अपने धार्मिक जुड़ाव और जिहाद के प्रति प्रतिबद्धता को लेकर किसी के भी मन-मस्तिष्क में तनिक भी संदेह नहीं छोड़ा कि वे धर्म विशेष के लिए ही मारने मिटने आये थे।.....

प्रेरक प्रसंग

एक शास्त्रार्थ

हरियाणा के लोककवि पण्डित बस्तीराम ने ऋषि के दर्शन किये और जीवनभर वैदिक धर्म का प्रचार किया। शास्त्रार्थ की भी अच्छी सूझ थी। एक बार पौराणिकों से पाषाण-पूजा पर उनका शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिक पण्डित से जब और कुछ न बन पड़ा तो अपनी परम्परागत कुटिल, कुचाल चलकर बोला, ''आपका ओ३म् किस धातु से बना है?''

पण्डितजी व्याकरण के चक्र में पड़कर विषय से दूर जाना चाहते थे। पण्डित बस्तीरामजी सूझवाले थे। श्रोताओं को सम्बोधित करके बोले, ''ग्रामीण भाई-बहिनो! देखो, कैसा विचित्र प्रश्न यह मूर्त्तिपूजक पण्डित पूछ रहा है कि तुम्हारा ओ३म् किस धातु से बना है। अरे! सारा संसार जाने कि हम प्रतिमा-पूजन नहीं मानते। इसी विषय पर तो शास्त्रार्थ हो रहा है। अरे पण्डितजी! हमारा 'ओ३म्' तो निराकार है, सर्वव्यापक है। वह न पत्थर से बना, न तांबे से, न पीतल से और न चाँदी-सोने से। तुम्हारा गणेश किसी भी धातु से बना हो, भले ही मिट्टी का गणेश बना लो। हमारा ओ३म् तो सब जाने धातु से नहीं बन सकता।'' सब ग्रामीण श्रोता पण्डित बस्तीराम व वैदिक धर्म की जय-जयकार करने लगे। पौराणिक पण्डित भी बड़ा चकराया कि वह आप ही अपने जाल में ऐसा फँसा कि निकलने का समय ही न मिला।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में

अन्तर्विद्यालयी नारा लेखन प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा विभिन्न आर्य विद्यालयों में प्रतियोगिताएं प्रारम्भ हुईं। मंगलवार 5 जुलाई 2016 को नारा लेखन प्रतियोगिता रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। आर्य विद्यालयों से लगभग 100 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। इस प्रतियोगिता को कक्षा 4 से 12 तक 4 वर्गों में बाँटा गया। चार वर्गों में क्रमशः पर्यावरण, स्वच्छता अभियान, नारी सुरक्षा शिक्षा, बिना जाति बिना भेद-'सारा भारत एक' विषय पर बच्चों ने आकर्षक व सुंदर नारे लिखे।

इस अवसर पर निर्णायक मंडल में सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री बादल जी, श्रीमती सरला बंसल व सुनील जी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। चारों वर्गों में दो-दो प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

सभी प्रतियोगिओं को सुन्दर प्रमाणपत्र व कॉमिक्स और विजेताओं को सुन्दर मैडल भी देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता के आयोजन की व्यवस्था अध्यक्ष श्री विकास वर्मा, प्रबन्धक नमिता पालित व प्रधानाचार्या श्रीमती सविता महाजन ने की। सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई।

प्रथम वर्ग

प्रथम : वंश मित्तल
महर्षि. दयानन्द प. स्कूल, शादीखामपुर

प्रथम : पल्लवी गौतम,
महर्षि द.प. स्कूल, न्यू मोती नगर

द्वितीय :अंकित
महर्षि द.प. स्कूल, शादीखामपुर

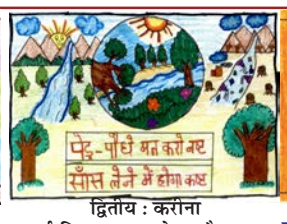

द्वितीय : करीना
आर्य शिशु शाला, ग्रेटर कैलाश-1

तृतीय : हर्ष सैनी
महर्षि दयानन्द प. स्कूल, शादीखामपुर

तृतीय : हिमांशी चौधरी
रतनचन्द आर्य प. स्कूल, सरोजनी नगर

द्वितीय वर्ग

प्रथम : राहुल, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पं. बाग

प्रथम : मयंक, रतनचन्द्र आर्य पब्लिक स्कूल, स. नगर

द्वितीय : वंश कुमार, दयानन्दअ आ. वि., तिलक नगर

द्वितीय : शशांक, रतनचन्द आर्य प. स्कूल, सरोजनी नगर

तृतीय : अनन्त, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पं. बाग

तृतीय : विशान्त, दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

चतुर्थ : आर्यन राज, रतनचन्द आर्य प. स्कूल, सरोजनी नगर

चतुर्थ : अभिषेक सजवान, रतनचन्द आर्य. प. स्कूल

तृतीय वर्ग

प्रथम : दिव्यांशु त्यागी, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पं. बाग

प्रथम : विक्रम, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाब बाग

द्वितीय : नेहा, बिरला आर्य कन्या विद्यालय, बिडला लाइन्स

द्वितीय : नेहा, बिरला आर्य कन्या विद्यालय, बिडला लाइन्स

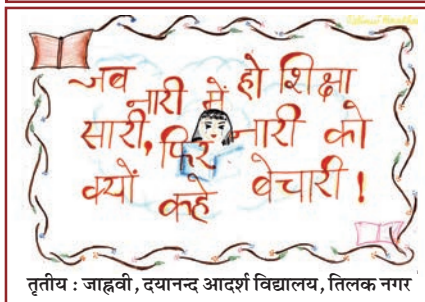

तृतीय : जाह्नवी, दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

तृतीय : नैन्सी, बिरला आर्य कन्या विद्यालय, बिडला लाइन

सान्तवना : ईशु, दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

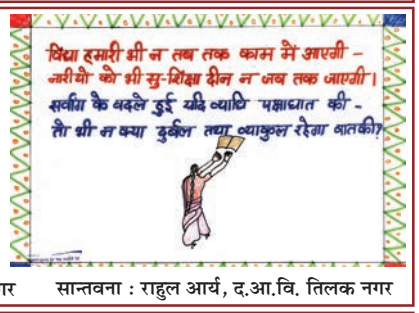

सान्तवना : राहुल आर्य, द.आ.वि. तिलक नगर

वर्ग चतुर्थ

प्रथम : खुशबू, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाब बाग

प्रथम : पुष्पा, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाब बाग

द्वितीय : श्रुति, एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाब बाग

द्वितीय : कीर्ति मेहता, दयानन्द आ. वि., तिलक नगर

तृतीय : रिया तनवर, एस.एम. आर्य प. स्कूल

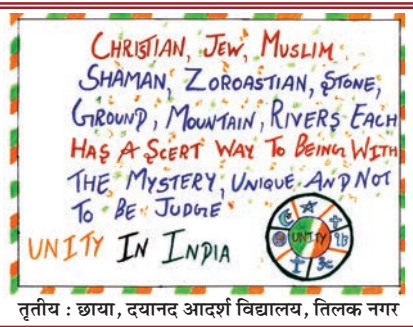

तृतीय : छाया, दयानद आदर्श विद्यालय, तिलक नगर

सान्तवना : निशिता मोटवानी, द.आ.वि. तिलक नगर

सान्तवना : साक्षी वर्मा, दयानन्द आ.वि. तिलक नगर

बर्मा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन .....

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की श्रृंखला में 2017 में जो सम्मेलन बर्मा में प्रस्तावित है उसी की तैयारी के मद्देनजर बर्मा की मुख्य आर्य समाजों एवं शहरों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उसी यात्रा विवरण पर आधारित ये लेख प्रस्तुत है। *- विनय आर्य*

आर्य समाज संगठन व आगामी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 2017 की दृष्टि से बर्मा व मलेशिया हेतु सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य व प्रकाश आर्य दिनांक 18/5/2016 को दिल्ली से रंगून (बर्मा) पहुंचे।

126 वर्ष पूर्व स्थापित आर्य समाज रंगून में रात्रि 7.30 से कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां लगभग 200 महिलाएं, नव युवक और बच्चे तथा पौराणिक भाई भी उपस्थित थे। यहां का 5 मंजिला आर्य समाज भवन मुख्य मार्ग पर स्थित है। कार्यक्रम में भारत से गये सभी पदाधिकारियों के उद्बोधन हुए। आर्य समाज की उपलब्धि व गतिविधियों की जानकारी दी। यहां के पदाधिकारी और अन्य आर्यजनों से संगठन संबंधी चर्चा की। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 में बर्मा में किए जाने की इच्छा व्यक्त की, सभी ने इसका स्वागत करते हुए उत्साह प्रदर्शित किया। तदुपरान्त रंगून से 650 किमी. दूर माण्डले के लिए कार से रवाना हुए।

हमारे साथ बर्मा सभा के महामन्त्री श्री विजय शंकर जी एवं प्रचारक श्री चन्द्रदत जी भी थे। रास्ते में राठेगांव, जिकरी, जियावाड़ी, शिवपुर, प्योप्ये आदि स्थानों पर ग्रामीण अंचल की आर्य समाजों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रत्येक आर्य समाज का अपना भवन है, यह देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। यह अपने आप में ही एक बड़ी बात है। पूरा दिन व रात भर स्थानीय समाजों के पदाधिकारियों से मुलाकात की।

दूसरे दिन संगठन चर्चा के लिए रठेशांव गांव पहुंचे, यहां आर्य समाज का भवन बना हुआ है, इसकी स्थापना 1926 में हुई थी। यहां पर प्राय: बिहार क्षेत्र के व्यक्ति हैं जो जीकरी व आस-पास के 100 ग्रामों में बसे हुए हैं।

इसी के पास शिवपुर आर्य समाज डेढ़ किलोमीटर दूर है, यहां के प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी हैं जिनकी अवस्था 101 साल है। ये आर्य समाज भी मुख्य मार्ग पर स्थित है। इसके पश्चात् जियावाड़ी 3.30 बजे पहुंचे, यहां पर पं. चन्द्रिका प्रसाद जी का निवास है। आर्य समाज भवन दो मंजिला बना है, यहां पर भी लगभग 100 महिला पुरुष एकत्रित हुए। इस आर्य समाज का सत्संग कक्ष बड़ा व्यापक है। यहां पर लोगों से विचार विनिमय करने के बाद रात्रि में च्योप्ये पहुंचे यहां रात्रि में भी लगभग 50 बालक-बालिकाएं और इतने ही महिला-पुरुष मौजूद थे। बालकों व बालिकाओं ने गीत सुनाएं व मन्त्रपाठ किया। उन बच्चों ने आर्यसमाज के जिन पुराने गीतों को भावपूर्ण तरीके से याद करके सुनाया, हम सबकी आंखें भाव-विभोर हो गई और हम यह सोचने पर मजबूर हो गए कि लम्बे समय की विपरीत परिस्थियों के चलते भी इन आर्य महानुभावों ने किस प्रकार आर्य संस्कृति को सहेज कर रखा है और बच्चों के माध्यम से आगे भी बढ़ा रहे हैं।

इस क्षेत्र में 20 आर्य समाजें हैं, अनेक स्थानों पर भवन हैं जहां हिन्दी पढ़ाई जाती है। जियावाडी में गुरुकुल की तरह बच्चों की शिक्षा होती है, लगभग 150 बच्चे रहते हैं। हिन्दी हेतु सर्वशिक्षा अभियान चलाया जाता है। यह कार्यक्रम 30 से 40 मिनिट तक का होता है।

रंगून से चलकर सुबह 5.30 बजे 21-22 घण्टे की यात्रा कर माण्डले पहुंचे। माण्डले में दो आर्य समाज भवन हैं, पुराना भवन आर्य समाज धर्मशाला के नाम पर है, जिसमें दो बड़े-बड़े कक्ष हैं जिनमें लगभग1000 व्यक्ति बैठ जावें, यह भवन तीन मंजिला बना है। इस आर्य समाज में नेताजी सुभाष चन्द बोस आकर सभाओं को संबोधित करते थे, यह ऐतिहासिक तथ्य इस भवन के साथ जुड़ा है। दूसरा नवनिर्मित भवन 6 मंजिला है जोकि वातानुकूलित और बहुत खूबसूरत आधुनिक संरचना का बना है। लिफ्ट व बड़े-बड़े तीन हॉल जिनमें एक साथ प्रत्येक में 500 से अधिक कुर्सियां लग सकती हैं। यह भी नगर के मुख्य मार्ग पर बना है।

बर्मा में आने पर यहां की सक्रियता और कार्य को देखा जो अनुमान से परे था। गांवों में अनेक आर्य समाजें संचालित की जा रही हैं। यहां के समाज की विशेषता यह है कि यहां बच्चे व महिलाएं बड़ी संख्या में आर्य समाज से जुड़े हुए हैं। यह संगठन के भविष्य के लिए शुभ संकेत है। किन्तु अर्थ व प्रचारकों की कमी है यदि इस पर थोड़ा सहयोग मिल जावे तो

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिस्थितियां कभी हावी न हो सकी वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार पर

लगभग 45 साल की लम्बी अवधि के फौजी शासन के अन्तर्गत शासित रहने वाले बर्मा में आर्यसमाज की स्थापना आज से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व हो चुकी थी। फौजी शासन में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए कितना परिश्रम और कष्ट झेलना पड़ा, इसके लिए एक ही उदाहरण जानना पर्याप्त होगा। स्थानीय महानुभावों ने जानकारी दी कि उस दौरान किसी भी पुस्तक का प्रकाशन, फोटोप्रति, कराना बिना सरकारी अनुमति के निषेध था और सरकारी अनुमतियां प्राप्त करना अपने आप में एक बड़ा युद्ध था। अतएव आर्यसमाज का साहित्य भी न छप सका और बाहर से भी साहित्य का देश में मंगाना लगभग असम्भव सा था। ऐसी स्थिति में जियावाड़ी क्षेत्र की 7-8 आर्यसमाजों में कुछ गिने-चुने सत्संग गुटका उपलब्ध थे। जब किसी एक समाज में सत्संग होता था तो उन सत्संग गुटकों से सब आर्यजन मन्त्रपाठ करते थे। दूसरी आर्यसमाज के एक-दो कार्यकर्ता उस आर्यसमाज में पहले से आकर बैठते थे कि जब आर्यसमाज का सत्संग समाप्त हो तब वे उन गुटकों को अपनी समाज में लेकर जाएं। ठीक इसी प्रकार उस आर्यसमाज में भी अन्य आर्यसमाज के कार्यकर्ता यज्ञ समाप्त होने का इन्तजार करते थे। इस प्रकार सायंकाल तक अलग-अलग स्थानों पर साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न किया जाता था। यह स्थिति दो-चार सप्ताहों तक नहीं अपितु सालों-साल चली। न जाने ऐसी ही और कितनी विपरीत परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाया जाता रहा और आज वहां आर्यसमाज एक बहुत अच्छे संगठन के रूप में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में कार्यरत है। - विनय आर्य

(ऊपर) प्रमुख आर्यसमाजों के अधिकारियों के साथ बैठक एवं बच्चों को दी विभिन्न कॉमिक्सें। (नीचे) आर्य प्रतिधि सभा म्यामां के पदाधिकारियों के साथ बैठक एवं संयुक्त स्मृति फोटो बर्मा के अधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य।

म्यांमार (बर्मा) के आर्यसमाज भवनों - आर्यसमाज जियावाड़ी के पदाधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी।

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Come with felicitous protection

"Whether you come at the milking time of the cattle, at the dawn of the day, or at noon when the sun is high in heaven, or by day or by night, come with felicitous protection. O destroyer of adversaries, may we ever overcome all adversaries."

"Protect us, O benevolent and benigh Lord, with favours; may we live under your liberal protection and conquer the infidels. May you protect us against all malignity and hatred of mortal man."

उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य।
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान।।
(Sv.1754)

Uta yatam samgave pratar ahno madhyan dina udita suryasya.
diva naktamavasa santamena nedanim pitirasvina tatana..

पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा।
साह्याम दस्यून् तनूभिः।। (Sv.987)

Patam no mitra paubhiruta trayetham sutratra. Sahyam dasyun tanubhih..

Ascension

"When an earnest seeker in pursuit of accomplishment accends one step, he beholds a wider space for further ascent. O God, knowing his pure intent, kindly bless him in his endeavours, illuminate his path and assist his attainment."

There is no substitute for dedicated life and persesverence. The verse teaches how to reach the summit of the desired destination. When a man starts climbing up a mountain, the highest peak is not visible to him. As he advances upwards filled with vigour, the next topmost point appears in his vision. With each step of ascent, he comes nearer to the goal. A man who discharges his duty with devotion, comprehends further duties. Laggardliness and lack of energy from the outset are signs of failure. Successful studentship leads to a happy household. A diligent householder later enters into social service with dedication. He then moves to the wider sphere of service when he realizes all beings in himself. This is the account of success of a devout person who may choose whichever virtuous path he may like. The doctrine of ascension, consolidation and further upward movement is the secret of yoga leading to the final attainment of bliss.

यत्सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति।। (Sv.1345)

Yat sanoh sanvaruho bhuryaspasta karttvam.
tad indro artham cetati yuthena vrsnir ejati..

A Unique Prayer

Ordinarily prayers have different motivations. Some pray for wealth, some for knowledge and some for power. Here the devotee says, ' O God, praying for food, I will get food. If I do not get strength after taking food, I will be weak. Then after food, I will pray for strength. After getting food and strength, I will ask for children to save the progeny. Afterwards I will beg for fame and glory. Still my prayers will not end. So I will pray for friendship with you which is the panacea for all motives. Once you become my friend, you will provide everything for your friend.'

Friends of one's person are many.So in every life there will be new friends.Parents, husband and wife, children, relatives, faith, language, land all are personal. They will change in course of the life cycle. But God remains as eternal friend of the immortal soul from birth to rebirth and even after the death of the body. A true friend is a benevolent mentor and a selfless companion.

All mortal friends are subject to endless wants. They become disatisfied when their wants are not fulfilled. Since the Lord has no want whatsoever, He is the true friend of the mortal creatures. 'O Lord, I pray earnestly for your friendship. I promise not to pollute your creation when I become your friend.'

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे।।
(Sv.787)

Pavamanasya te vayam pavitramabhyun datah. Sakhitvama vrnimahe.

Our Continuous Prayer

"On every occasion, in every noble work, we invoke the resplendent God, the best among our friends, for our protection and happiness."

"Day and night, we approach you, O Lord, with reverential homage through sublime thoughts and noble deeds."

"Earnest to prayers, O Cosmic Lord, may you enter into the spirit of our songs of praise for the completion of the sacrifice that will benefit all mankind."

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।।
(Sv.163)

Yogeyoge tavastaram vajevaje havamahe. sakhaya indram utaye..

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।। (Sv.14) *Upa tvagne dive-dive dosavastardhiya vayam. namo bharanta emasi.* **जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्।।** (Sv.15) *Jarabodha tad vividdhi vise-vise yajniyaya. Stomam rudraya drsikam.*

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ -7

गतांक से आगे....

आगे का अभ्यास करने से पहले आज हम कुछ पुनरावृत्ति कार्य कर लेते हैं कुछ वाक्यों को पुनः स्मरण कर लेते हैं -

हिंदी वाक्य	संस्कृत वाक्य
1. मेरा नाम संदीप है।	मम नाम संदीपः अस्ति
2. यह मेरा मित्र प्रदीप है।	एषः मम मित्रं प्रदीपः अस्ति।
3. आप कौन सी कक्षा में पढ़ती/पढ़ते हो ?	भवान्/भवती कस्यां कक्ष्यां पठति ?
4. मैं सप्तमी कक्षा में पढ़ता हूँ।	अहं सप्तमी कक्षायां पठामि।
5. मैं नहीं जानता हूँ।	अहं न जानामि।
6. आपका नगर कौन सा है ?	भवतः ग्रामः/नगरः कः ?
7. समय पर आ जाना।	समये आगच्छतु।
8. आप कहाँ से आते/आती हो ?	भवान्/भवत्या कुतः आगच्छति ?
9. मैं विद्यालय से आता हूँ।	अहं विद्यालयतः आगच्छामि।
10.आप कहाँ जाते हो ?	भवान् कुत्रः गच्छति ?
11. मैं मन्दिर/कार्यालय जाता हूँ।	अहं देवालयं/कार्यालयं गच्छामि।
12. मैं संस्कृत थोड़ा जानता हूँ।	अहं संस्कृतं किञ्चित् जानामि।
13. मैं संस्कृत में वार्तालाप करता हूँ।	अहं संस्कृतेन संभाषणं करोमि।
14.अरे दस बज गए।	अरे ! दशवादनम् !
15. आप कैसे हो ?	भवान् कथम् अस्ति ?
16. कृपया पुस्तक दीजिए।	कृपया पुस्तकं ददातु।
17 मैं पुस्तकालय जाता हूँ।	अहं पुस्तकालयं गच्छामि।
18. कितने बजे हैं ?	कः समयः ?
19. सवा चार बजे हैं।	सपाद -चतुर्वादनम्।
20. दो बजे अवश्य जाना है।	द्विवादने अवश्यं गन्तव्यम् अस्ति।
21. तीन बजे एक गाड़ी है।	त्रिवादने एकं यानम् अस्ति।
22. क्या विद्यालय 7 बजे का है ?	विद्यालयः सप्तवादनतः किम् ?
23. छः बजे तक क्या करोगे ?	षड् वादन पर्यन्तं तत्र किं करिष्यसि ?
24. क्या यह राजु भाई का घर है ?	राजु महोदयस्य गृहं किम् ?
25. रविवार को कौन सी दिनाङ्क है।	रविवासरे कः दिनाङ्कः ?
26.आपकी जन्मतिथि कौन सी है ?	भवतः जन्म दिनाङ्कः कः ?

पुनरावृत्ति अभ्यास के पश्चात् द्वितीया विभक्ति का अभ्यास करते हैं- द्वितीया विभक्ति

कर्त्तृवाच्य (एक्टिव वॉइस) में कर्म (=क्रिया की निष्पत्ति में कर्त्ता को अत्यन्त अभीष्ट वस्तु) कारक में द्वितीया विभक्ति होती है

यथा- इन्द्रः राज्यम् इन्दति= राजा राज्य पर शासन करता है।
वस्त्रसेवकः वस्त्रं सीव्यति = दर्जी कपड़े सिल रहा है।
पितृव्या कन्थां कन्थति = चाची गुदड़ी सिल रही है।
माता दधि मथ्नाति = मां दही मथ रही है।
मथनी दधि मथ्नाति = मथनी दही बिलो रही है।
पिता मृतपुत्रं शोचति/शोकति = पिता मृतपुत्र का शोक करता है।
सेविका तण्डुलान् शोधति = सेविका चावल साफ कर रही है।
ईश्वरः अस्मान् शुन्धति = ईश्वर हमें पवित्र कर रहा है।
ज्ञानं मनः शुच्यति/शुच्यते = ज्ञान मन को शुद्ध करता है।
स्वसा भाण्डानि मार्जयति = बहन पात्रों को मांज रही है।
वसुधा वस्त्राणि प्रक्षालयति = वसुधा कपड़े धो रही है।
पितृस्वसा प्राङ्गणं सम्मार्जयति = बुआ आंगन बुहार रही है।
मातृष्वसा गृहं/गेहं सम्मार्ष्टि = मौसी घर बुहार रही है।
पविता बुद्धिं पुनाति = पवित्र ईश्वर बुद्धि को निर्मल करता है।
पवनः वातावरणं पवते = वायु वातावरण को शुद्ध करती है।
अग्निहोत्रं गृहं पवित्रयति = हवन घर को पवित्र करता है।
सत्यं चित्तं पवित्रीकरोति = सत्य चित्त को पवित्र करता है।

भोजभूरित्वम्(भोज सम्बन्धित विविध क्रियाएं)

भवति किं चर्वति = आप क्या चबा रही हैं ?
अहं भूचणकान् चबामि = मैं मूंगफली चबा रही/रहा हूं।
इयं बालिका जंबीररसं पिबति = यह बच्ची नींबूपानी पी रही है।
ज्वरितः गुलिकां निगलति = रुग्ण गोली खा रहा है।
सा बाला आम्रं चूषति = वह लड़की आम चूसती है।
इमाः कन्या अवलेहम् अवलिहन्ति = ये कन्याएं चटनी चाट रही हैं।
इमौ किशोरौ शाल्यपूपान् अत्तः = ये दोनों किशोर डोसे खा रहे हैं।
इमे कुमाराः वाष्पापूपान् अश्नन्ति = ये सब कुमार इड़ली खा रहे हैं।
पितामहः कृसरां/कृशरां भुङ्क्ते = दादाजी खिचड़ी खा रहे हैं।
मातामहः चायं आचमनति = नाना चाय की चुस्कियां ले रहे हैं।
मातामही रोटिकां ग्रसति = नानी एक-एक ग्रास रोटी खा रही है।
महिषी घासं घसति = भैंस घास खा रही है।
बलिवर्दः घासं चरति = बैल घास चर रहा है।
वत्सा तृणानि तृणति = बछड़ी तिनके खा रही है।

आशा है कि आप सबने यह पाठ अच्छी तरह से समझ लिया होगा। आइए आज इस भाग के कुछ और विशेष नियम सीखते और अनुवाद करते हैं। **नियम संख्या (1.)** कर्ता-कारक में प्रथमा विभक्ति होती है। इसी कर्ता के अनुसार क्रिया होती है, अर्थात् कर्ता-कारक में जो पुरुष और वचन हो, वही पुरुष और वचन क्रिया में भी होंगे। जैसे: (1.) बालकः पुस्तकं पठति। इस उदाहरण में कर्ता बालक में प्रथम-पुरुष और एकवचन है, इसी प्रकार क्रिया में भी समान है। (2.) युवां पुस्तकं पठथः। इसमें कर्ता युवां में मध्यम-पुरुष और द्विवचन है, तो क्रिया में भी समान है। (3.) वयं पुस्तकं पठामः। इस उदाहरण में कर्ता वयम् उत्तम-पुरुष और बहुवचन का है तो क्रिया में भी समान है।

इस प्रकार कर्ता और क्रिया में पुरुष और वचन समान होंगे। नियमः (2.) कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे -छात्रः वेदं पठति। इस उदाहरण में कर्म वेद है, अतः उसमें द्वितीया हो गई। यहाँ कर्म का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् कर्म में चाहे कोई भी वचन हो क्रिया अपरिवर्तित रहेगी। क्योंकि क्रिया कर्ता के अनुसार होगी। इसी उदाहरण को अन्य वचन में देखें - छात्रः वेदौ पठति। छात्रः वेदान् पठति। बनाने के लिए कुछ उदाहरणः-

1. बालक वहाँ जाता है। 2. दो बालक घर जाते हैं।
3. वह मनुष्य हँसता है। 4. तुम भोजन करते हो।
5. तुम दोनों पत्र लिखते हो। 6. मैं आम खाता हूँ।
7. तुम सब समाचार-पत्र पढ़ते हो। 8. हम दोनों पुस्तक पढ़ते हैं।

आप इन वाक्यों का अनुवाद करें और sandeep.gurukul@gmail.com पर भेज दें। जिससे इनका मूल्यांकन किया जा सके।

क्रमशः

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

आर्य समाज दुर्गा पार्क का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दुर्गा पार्क नई दिल्ली अपना वार्षिकोत्सव दिनांक 17 से 20 जुलाई प्रात: 6.30 आर्य समाज सी-ब्लॉक जनकपुरी में व 20 से 23 जुलाई 2016 सायं 6.30 बजे से दुर्गा पार्क में आयोजित कर रहा है। समापन समारोह 24 जुलाई प्रात: दुर्गापार्क में आयोजित किया जाएगा।

-श्रीमती ऊषा देवी, प्रधान

औषधीय पौधे लगाए

आर्य समाज कोटा द्वारा दिनांक 4 जुलाई 2016 को दिल्ली के जनकपुरी स्थित उद्यान में औषधीय पौधे (गुग्गल, बिल्वपत्र तथा रुद्राक्ष) के पौधे लगाए गये। वृक्षारोपण के इस अभियान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा 'औषधीय पौधों से वातावरण प्रदूषण मुक्त होता है इसलिए भी जीवन में इन औषधीय पौधों का विशेष महत्त्व है।' सर्वश्री धर्मपाल आर्य, शिव कुमार मदान, एस.पी.सिंह, विक्रम नरूला, वीरेन्द्र सरदाना, हर्षवर्धन, वीणा आर्या, विभा आर्या तथा कोटा राजस्थान से पधारे अर्जुनदेव चड्ढ़ा, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं श्योराज वशिष्ठ सहित बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। इसी के साथ श्री अर्जुन देव चड्ढा जी ने पॉलिथिन मुक्त अभियान के तहत कपड़े के थैले भी वितरित किये। - *सयोजक*

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार के लिए नाम आमन्त्रित

वेद वेदांग, आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि में लिखे गये ग्रंथ पर प्रतिवर्ष 'गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार' किसी चुने हुए विद्वान के ग्रंथ पर दिया जाता है। पुरस्कार में 21 हजार रुपये, स्मृति चिह्न तथा अंग वस्त्र दिये जाते हैं। विद्वानों से अनुरोध है कि अपने महत्वपूर्ण कृतियों की 4 प्रतियां कार्यालय को 15 अगस्त 2016 तक भेजने की कृपा करें। ग्रंथ ढाई सौ पृष्ठों से कम नहीं होना चाहिए। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव, उप प्रधान, मो. 09415848651

डॉक्टर्स डे पर नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर

स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में डॉक्टर्स डे पर नि:शुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में डॉ. देशबन्धु गुप्ता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.) डॉ. डी.सी. शर्मा जिला मातृ शिशु एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि) ने रोगियों की जांच कर दवाएं दीं। इस अवसर पर सर्वश्री प्रदीप कुमार आर्य, राम कुमार गुर्जर, रमेश चुघ, रामनारायण सैनी, अनिल कुमार सैनी, श्रीमती राम दुलारी, सुमन आर्य उपस्थित थे। - *मन्त्री*

भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा जी का मांडवी (कच्छ) में 83वें बलिदान दिवस समारोह

माण्डवी (कच्छ) आगामी महीने 22 अगस्त 2016 भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के बलिदान दिवस अवसर पर भव्य आर्य महिला महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है । गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व व मांडवी आर्य समाज एवं जन सहभागिता के साथ इस कार्यक्रम को मनाया जाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस-पुत्र, इग्लैण्ड में इण्डियन हाऊस के संस्थापक एवं हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा की धर्मपत्नी, देश भक्त, भारतीय संस्कृति संस्कारों से ओतप्रोत स्वर्गीय भानुमती वर्मा का 83वाँ बलिदान दिवस का कार्यक्रम गुजरात सरकार G.M.D.C. के सहयोग से अनेक कार्यक्रम होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख श्री सुरेश चन्द्रजी आर्य करेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, आर्यसमाज टंकारा के प्रमुख श्री हंसमुखभाई परमार करेंगे। - *संयोजक*

पृष्ठ 5 का शेष

इस देश में आर्य समाजियों की एक अच्छी संख्या हो सकती है।

माण्डले में आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामां की ओर से देश के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई थी जिसमें पूरे देश के लगभग हर क्षेत्र के 30 के करीब अधिकारी उपस्थिति हुए जिन्होंने अपने-अपने क्षत्रों की जानकारी दी तथा समस्याएं भी बताई। सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस बैठक में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने सभा की ओर से 2017 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को बर्मा में करने सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया सभी उपस्थित सदस्यों ने इस पर व्यापक चर्चा की तथा चर्चा के उपरान्त वर्ष 2017 में अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य में आयोजित करने हेतु सिद्धान्त रूप से इसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। आगे की योजनो लिए बर्मा के महानुभावों की समिति बनाकर कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा।

19 से 23 मई तक बर्मा में लगभग 10 से 12 कार्यक्रम व व्याख्यान, प्रवचन व संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इस अवसर पर सभी आर्य समाजों में भारत से ले जाई गई बच्चों की कॉमिक्स, वैदिक साहित्य, ध्वज, ओ३म् दुपट्टे, भजन व विचार चैनल्स की सी.डी. प्रदान की गईं।

कुल मिलाकर यह यात्रा बर्मा में आर्य समाज के लिए सार्थक सिद्ध हुई व एक नव चेतना का संचार हुआ। आगामी 2017 में होने वाला आर्य महासम्मेलन एक अत्यन्त लाभकारी व महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है। पूरे कार्यक्रम में श्री अशोकजी खेत्रपाल एवं उनके पूरे परिवार का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभा मन्त्री श्री विजय शंकर जी एवं प्रचारक श्री चन्द्रदत्त जी इस पूरे कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के साथ रहे। इस अवसर पर सर्वश्री दीपा दास, बलराम शर्मा, दुर्गेश गुप्ता, चिन्तामणि, ओम प्रकाश जी, धर्मराज जी सुरेन वर्मा का सहयोग रहा। सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने ब

दिनांक 24 को माण्डले से चलकर मलेशिया पहुंचे। यहां का आर्य समाज मन्दिर बड़े महत्त्वपूर्ण मार्ग पर विशाल भू-खण्ड पर निर्मित है। किन्तु खेद है वहां कोई गतिविधि संचालित नहीं हो रही हैं। आर्य समाज का पता पूछा तो उस पते पर आर्य समाज था ही नहीं। काफी प्रयास करने पर भी आर्य समाज का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका। कुछ व्यक्ति भारत से सम्बन्धित मिल गए थे, उनके माध्यम से सारी जानकारी प्राप्त हो जाएगी ऐसा अनुमान है। इस प्रकार बर्मा का दौरा तो बड़ा सफल व उत्साहवर्धक रहा।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

आशुभाषण : 20 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज शादीपुर खामपुर, नई दिल्ली-110008

मंत्रोच्चारण : 28 जुलाई 2016 प्रात: 9:00 बजे
आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज प्रीत विहार, दिल्ली-92

एकांकी प्रतियोगिता : 2 अगस्त 2016 प्रात: 9:00 बजे
महर्षि दयानंद प. स्कूल न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-110015

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगितों में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें।- *प्रस्तौता*

शोक समाचार

डॉ. राधाकृष्ण वर्मा जी को पितृशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा जी के पूज्य पिता श्री रामचन्द्र वर्मा जी को दिनांक 16 जून, 2016 गुरूवार को शोरापुर कर्नाटक में 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री रामचन्द्र वर्मा जी आर्यसाज शोरापुर के वषो तक प्रधान रहे तथा उन्होंने ही आर्यसमाज शोरापुर का भवन निर्माण करवाया। वे हैदराबाद सत्याग्रह से भी जुड़े थे। नं. नरेन्द्र जी, पुत्र बंशीाल व्यास जी के साथ सक्रिय सदस्य थे। नं. रामचन्द्र देहलवी जी से उनके निकट सम्बन्ध रहे। वे अपने पीछे दो पुत्रों डॉ. राधाकृष्ण वर्मा एवं श्री ओम प्रकाश वर्मा का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित
नैतिक शिक्षा की पुस्तकें
नर्सरी से 12वीं कक्षा तक
आकर्षक छूट 25%
बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 जुलाई से रविवार 17 जुलाई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14 जुलाई/ 15 जुलाई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 जुलाई, 2016

नई शिक्षा नीति 2016 में संस्कृत को महत्त्व न देने पर रोष

दिनांक 30 जून 2016 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नई शिक्षानीति 2016 में संस्कृत को उचित स्थान न देने पर संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने बैठक कर नाराजगी जाहिर की है। पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा जारी शिक्षानीति 1968 तथा 1986 में संस्कृत को सम्मानित स्थान दिया गया था, परन्तु मोदी सरकार द्वारा तैयार किए जा रहे शिक्षानीति 2016 के ड्राफ्ट में संस्कृत के लिए औपचारिकता निभायी गयी है। संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने समय-समय पर शिक्षानीति निर्माण समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं प्रधानमंत्री जी को ज्ञापन सौंपे हैं , जिनमें संस्कृत के उत्थान का निवेदन किया है। इनमें प्रमुख रूप से अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षाबोर्ड खोलने, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय बनाने, सभी केन्द्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग खोलने, संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों को स्किल्ड इंडिया, डिजिटल इंडिया से जोड़कर उनमें आयुर्वेद, फार्मेसी, योग, संगीत आदि रोजगारपरक पाठ्यक्रम लागू करने, मंडारिन की तरह विदेशों में संस्कृत केन्द्र स्थापित करने, 5 लाख संस्कृत पांडुलिपियों पर अनुसंधान हेतु हाईटेक केन्द्रों को स्थापित करने की मांग की थी। साथ ही संस्कृत में निहित ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक विषयों में जोड़ने हेतु निवेदन किया था। राजग सरकार ने किसी पर ध्यान नहीं दिया । मोदी सरकार हाथी की तरह है, जिसके दांत खाने के और-दिखाने के और हैं । अखबारों में संस्कृत के लिए बहुत घोषणाएं, परन्तु शिक्षानीति में सिर्फ एक वाक्य ? संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने अपनी मांगों को शिक्षानीति में सम्मिलित करने का अनुरोध किया है। साथ ही मैकाले के समर्थन में अंग्रेजी को द्वितीय भाषा बनाने, देश में 80% बोली एवं समझी जाने वाली हिन्दी को कोई स्थान न देने पर आपत्ति जताई है। उच्च, तकनीकी तथा प्रबन्धन शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को बनाने हेतु निवेदन किया है। बैठक में डॉ. वी दयालु, डॉ. ब्रजेश गौतम, डॉ. श्री कृष्ण सेमवाल,डॉ. ऋता शर्मा, सुशील कुमार आदि उपस्थित थे।

- सचिव

मनु संस्कृति संस्थान द्वारा
आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज में जो महिलाएं, संन्यासनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर प्रेषित करें। सम्पर्क सूत्र-

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए-41 लाजपत नगर-2 (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-110024,
दूरभाष : 011-45791152, 29842527, 9599107207

प्रतिष्ठा में,

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए 'आर्य सन्देश' में एक नय स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** प्रारम्भ किया गया है।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिख भेजिए हमारा पता है- 'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। *-सम्पादक*

स्वास्थ्य चर्चा

गुर्दे की पथरी

आजकल गुर्दे की पथरी आम बीमारी हो गयी है। पथरी को बिना ऑपरेशन घरेलू उपचार से भी निकाला जा सकता है। आइए जाने घरेलू उपचार :-

1. कुलथी की दाल, गोखरू 10-10 ग्राम कूट कर 200 ग्राम पानी में उबालें। एक चौथाई रह जाने पर छान कर आधा ग्राम शिलाजीत के साथ दिन में तीन बार निवाया पीयें। रामबाण दवा है।
2. पत्थर फोडी बूटी 10 ग्राम, काली मिर्च पांच को पानी 50 ग्राम में पीसकर प्रात: सायं 10-15 दिन पीयें।
3. जौखार, सुहागा भुना, कलमी शोरा 5-5 ग्राम पीसकर एक-एक ग्राम प्रात:-सायं मूली के पानी या कुल्थी के जुसांदे के साथ प्रात: सायं लेने से गुर्दे व मूत्राशय की पथरी धुलकर निकल जाती है।
4. अजवायन 5 ग्राम प्रात:-सायं गर्म पानी से 8-10 दिन लें।
5. लोहे का एक छल्ला बीच की बड़ी उंगली में पहन लें।
6. कुल्थी 6 ग्राम को 125 ग्राम पानी में खूब उबालें। फिर छानकर मूली का रस एक चौथाई कप में मिलाकर प्रात: सायं लें।
7. महाशंखबटी एक-एक गोली पानी से भोजन के बाद दोनों समय लें।
8. पुनर्नवा क्षार 4-4 रत्ती गर्म पानी से प्रात: सायं लें।
9. चन्द्रप्रभावटी दो-दो गोली शहद से प्रात: सायं लें।
10. बिडंगासव 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें।
11. तिलक्षार 4 रत्ती को नीबू रस एक चौथाई कप में मिलाकर प्रात: सायं प्रयोग करें।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह